Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 9, June-2019, ISSN 2230-7540

मुस्लिम महिलाओं के शिक्षण एवं सामाजिक स्तर का अध्ययन प्रस्तुत

Chavan Pratibha Ramesh[1]* Dr. Lalit Mohan Choudhary[2]

[1] Research Scholar, Department of Social Work, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, M.P.

[2] Research Guide, Department of Social Work, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, M.P.

शोध सारंश (Abstract): - अक्कसर मुस्लिम औरत नाम आते ही घरकी चार दिवारी में बंद या पर्दे में रहेवाली स्त्री का चेहरा सामने उभरकर आता है। आर्थिक और सामाजिक विकास के लिये शिक्षा बेहत जरुरी है। लेकीन अफसोस की बात यह है की, मुस्लिम समाज इस में बेहद पिछडा हुआ है। मुस्लिम महिलाऐ कुछ हदतक प्रगती कर रही है लेकीन यह प्रगती अधिकतर उच्च और उच्च मध्यम वर्ग तकही सिमीत है। मुस्लिम समाज में आज भी समानता स्वतंत्रता नही है। उसपर पुरुष, परिवार, समाज तथा धर्म सबका दबाव हुआ करता है।

कीवर्ड – आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा, पिछडा, प्रगती, सिमित, स्वतंत्रता, असमानता, धर्म, दबाव

----------X----------

1) प्रस्तावना:

अक्सर मुस्लिम औरत नाम आते ही घर की चार दिवारी में बंद या पर्दे में रहनेवाली स्त्री का चेहरा सामने उभर कर आता है। समय के साथ साथ मुस्लिम समाज के स्त्रियों के रहन सहन पहनावा और बुर्खे में भी परिवर्तन आ रहा है। सदियोंसेसास लेती औरत ने जब अपनी आजादी के आसमान की तमन्ना की तो सबसे पहली जंग उसे अपने धर्म से लडनी पडी बदलते समय बदलते समाज सबदलते परिवेश और शिक्षा के बढते महत्व के बच हिंदुस्तान की मुस्लीम महिलाओं ने की बंदिशो को बेडीयों को झकझोरना शुरु कर दिया है उनमें अपना जीवन बदलने की बेताबी सुरु कर दि है।

इतिहास गवाह है कि शिक्षित कामो ने हो हमेशा समाज में तरक्ती की है किसी व्यक्ती के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए शिक्षा बेहद जरुरी है। लेकिन अफसोस की बात यह है की जहा विभिन्न समुदाय शिक्षा को विशेष महत्व दे रहे है। वही मुस्लिम समाज इस मामले आज की बेहद पिछडा हुआ है। मुस्लिम महिलाको सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक दृष्टी से खासी पिछडी है।

महिलाओं का कम शिक्षित होना अपने हक को हासिल करने के लिए मजबूती से स्टैंड न लेना आदि वजह भी हो सकती है। हमारे मुल्क में अब से ज्यादा निरक्षर मुस्लिम लडकियाँ और महिलाएँ ही है ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट स्तर पर स्थिती खासी चिंताजनक है। भारत में महिलाओं कि साक्षरता दर ५० प्रतिशत है। इसमें मुस्लिम महिलाएँ मात्र ११ प्रतिशत है। हायस्कूल तक शिक्षा प्राप्त करने वाली इन महिलाओं का प्रतिशत मात्र २ है और स्नातक तक पहुचते ही यह घटकर मात्र ०.८१ प्रतिशत ही रह जाता है। वर्तमान समाज में स्त्रियों ने सदियो की खामोशी तोडी है अपने व्यक्तिगत जीवन का उद्देश दर्शन उसका मन मिजाज सभी बदल रहा है। जीवन के हर क्षेत्र में मुस्लिम महिलाएँ आज अपना स्थान सुरक्षित कर रही है। चाहे वे शिक्षा का क्षेत्र हो चाहे विज्ञान का हो, खेलकुद का हो या मनोरंजन का हो, राजनितीक हो या फिर प्रशासन का हर क्षेत्र में मुस्लिम महिलाओं को कुछ हद तक देखा जा सकता है लेकिन यह प्रगति अधिकतर उच्च और उच्च माध्यम वर्ग तक ही सिमित है। मध्यम वर्गीय लडकी या आज भी संघर्षरित है निम्न वर्ग में अभी भी अशिक्षा का राज है।

www.ignited.in

मुस्लिम समाज मे आज भी कई जगह पर समानता स्वतंत्रता नही है, उसपर पुरुष, परिवार, समाज तथा धर्म सबका दबाव हुआ करता है। परिणाम स्वरुप मुस्लिम स्त्री खामोश रहते और अपना मुह बंद रखने के लिए विवश है इसके साथ हो रहे अत्याचार, शोषण, दहेज तथा घरेलू हिंसा को रोकने के लिए कानून तो बना दिया है। लेकिन आज भी मुस्लिम महिलाओं पर जोर जुलूम और अत्याचार में कमी नही आयी है इसका मुख्य कारण यह है कि अधिकांश महिलाओं को इस संबंध में जानकारी नही है जो इससे अनभिज्ञ है। मुसलमानों में बेरोजगारी इसलिए है क्योंकि उनमे शिक्षा की कमी है और शिक्षा इसलिए नही है क्योंकी वे गरीबी का कारण बेरोजगारी है। (भारतीय समाज संस्कृती पेज नं.३० से ३५)

भारत में मुस्लिम समाज में महिलाओं की हालत बुरी है। मुस्लिम महिलाए शिक्षा आर्थिक हालात और स्वास्थ के लिहाज से भारत की सबसे कमजोर नागरिक है और तलाक जैसे मामलों में एक तर्क नियमों और पुरानी परंपराओं ने उसे और कमजोर कर रखा है। मुसलमानों के विकास के लिए सदियों से भेदभाव की पीड़ित महिलाओं को बराबरी के स्तर पर लाना बहुत ही जरुरी है।

2) शोध के उद्देश :

i) मुस्लिम महिलाओं की शैक्षणिक व सामाजिक स्थिती को जानना।

ii) मुस्लिम युवतीयों के शैक्षणिक विकास में पारिवारीक योगदान को जानना।

iii) शिक्षा के प्रति मुस्लिम महिलाओं की रुची के संबंध को जानना।

iv) मुस्लिम महिलाओ के शैक्षणिक विकास व सामाजिक विकास में आनेवाली बाधाओं और उनके कारणो को जानना।

v) मुस्लिम समाज का शिक्षा के प्रति दृष्टीकोन जानना।

3) संशोधन गृहितकृत्य/उपकल्पना:

i) धार्मिक परंपरा के कारण मुस्लिम महिलाओं की शैक्षणिक और सामाजिक स्थिती असंतोषजनक है।

ii) परिवार की उदासीनता मुस्लिम युवतीयों के शैक्षणिक विकास में बाधक है।

iii) शैक्षणिक वातावरण का अभाव मुस्लिम युवतीयों में शिक्षा के प्रति अरुची निर्माण करता है।

iv) लिंगभेद यह मुस्लिम युवतीयों के शैक्षणिक विकास का सबसे बडी बाधा है।

v) मुस्लिम महिलाओं का सामाजिक स्तर निम्न प्रकार होता।

4) अध्ययन का क्षेत्र और विश्व:

संशोधन करने के लिए भौगोलिक क्षेत्र तय करना पडता है, उसे संशोधन क्षेत्र कहते है। संशोधन कर्तीने अपनी मर्यादाओं को ध्यान में रखते पैसा, टाईम, मेहनत का विचार करते नागपूर में जो मुस्लीम बस्ती है, भालदारपूरा, अत्तर ओली, दसरा रोड, गंजीपेठ, इतवारी, नबाबपूरा, मोमीनपूरा,जरीपटका, ताजनगर इन सभी बस्ती का क्षेत्र में चुनाव किया है।

5) संशोधन विश्व:

संशोधन क्षेत्र में जो एकक की संख्या रहेगी वो विश्व में गिनी जायेगी, संशोधनकर्ती का क्षेत्र बडा होने के कारण अध्ययन का विश्व अनिश्चित रहेंगा।

6) नमुना चयन पध्दती के दो प्रकार है:

i) संभाव्यता नमुना चयन पध्दती।

ii) गैर संभाव्यता नमुना चयन पध्दती। संशोधनकर्ती द्वारा अध्ययन के विषय को समझकर उसका क्षेत्र ध्यान में रखकर विश्व ध्यान में रखकर गैरसंभाव्यता नमुना चुनाव पध्दती से सुविधापूर्ण निदर्शन प्रणाली का अनुसंधानकर्तीने चयन किया। (डॉ.मुंजा रिसर्च मेथोडोलॉजी पेज क्र.१२० से १३०)

सन्दर्भ

Who Was Osman Hamdi Bey?". How To Talk About Art History. 27 April 2017. मूल से 13 जून 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 13 June 2018.

"Women in Muslim Societies: Diversity Within Unity". अभिगमन तिथि 10 दिसम्बर 2017.

Corresponding Author

Chavan Pratibha Ramesh*

Research Scholar, Department of Social Work, Sri Satya Sai University of Technology & Medical Sciences, Sehore, M.P.